RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Where dream Chisels into reality

Youngster

YOUNGSTER · ESTABLISHED 2004 · NEW DELHI · FEB 2020 · PAGES 4 · PRICE 1/- · MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

13th International Conference on "Quality Enhancement and Employability in Higher Education: A Holistic Approach" at TIAS, Rohini, Delhi.

r education institutio

"Contributing to national development has always been an implicit goal of Indian higher education institutions. For human resource development and capacity building of individuals, the role of higher education institutions is very significant and there is a good prospects for Higher Education in India since world's largest population of young people" said by Prof. J.L Gupta (Former. Vice-Chancellor of GGU Bilaspur, Central University) as a chief guest on the occasion of 13th one day International Conference on "Quality Enhancement and Employability in Higher Education: A Holistic Approach" on 29th Feb, 2020 at Tecnia Institute of Advanced Studies, Rohini, Delhi.

The conference began with lighting of the lamp by guest and dignitaries. On this occasion Mr. Kursat Capraz, (Sarkarya University,Turkey), Dr. Ram Kailash Gupta (Chairman, Tecnia Group), Dr. Ajay Kumar (Director, Tecnia Institute of Advanced Studies), Mr. Praval Upadhayay (MD, BCI Global Pvt. Ltd. New Delhi), Smt. Deepa Verma (Director,Central Forensic Laboratory, Govt. of NCT Delhi), Ms Parul Gupta (Deputy Director, Bureau of Indian Standards, Ministry of Consumer Affair, Food & Public Distribution, Govt. of India), Dr. Urvashi Sharma (Associate Prof., Delhi University), Prof. Rajesh Bajaj Dr. Sandeep Kumar and Dr. Leena Jenefa were present. Dr. Ram Kailash Gupta (Chairman, Tecnia Group of Institutions) discussed his views on expansion of advanced learning facilities and inclusion of disadvantaged groups would bring quality in education. He further motivated the teachers to play a decisive role in developing language skills, communication skills and technical expertise among the student community.

Dr. Ajay Kumar (Director, Tecnia Institute of Advanced Studies) in his opening remarks insisted upon the need of changing policies and strategies of education in accordance with the demands of time. He further added that unlike technology the higher education needs continuous up gradation. The issue of better quality in higher education has been a great concern for all who are directly or indirectly associated with the education and academic system. The reason is very obvious since the higher education could not keep required pace with the changes in technology, new trends of education system, occupational diversity, Global market trends and so on.

Guest of Honour Mr. Kursat Capraz, (Sarkarya University,Turkey) said that there is strong need for a clear demarcation among students if their preference is just to gain a useful employment, give a practical shape and self confidence to their start up idea or strengthen the academic and research skills.

"Conference Proceeding" was released during the seminar. Vote of thanks was given by Dr. Rashmi Gujrati (Deputy Director, TIAS). She concluded the all sessions and gave thanks to support by management, faculty, research scholars, students and non- teaching staff.

-Bal krishna Mishra

r education institutio

r education institutio

r education institutio

r education institutio

डिजिटल मीडिया की चुनौती का डट कर सामना कर रहे हैं समाचार-पत्र

स्माचार पत्रों का आधुनिक स्वरूप व्यक्ति की सामाजिक आवश्यकताओं, उपलब्धियों, मध्यवर्गीय संभावनाओं, लोकतांत्रिक इच्छाओं, व्यक्ति स्वातंत्रय और व्यावसायिक मानदंडों के विकास का प्रतिफल है। सामाजिक प्राणी बनने के साथ ही मनुष्य के लिए संचार ने एक आधारभूत आवश्यकता का रूप ले लिया था। आरंभ में सूचना संचार के निमित्त व्यक्ति ही 'समाचारपत्र का काम करता था, लेकिन जल्दी ही आवश्यकता ने आविष्कार को जन्म दे दिया और ईसा पूर्व 59 में रोम में श्एक्सा दिउरना' (रोज की घटनाएं) नाम के इश्तहार का रोजाना प्रकाशन किया जाने लगा। रोम के तत्कालीन शासक जूलियस सीजर का आदेश था कि यह इश्तहार शहर के सभी हिस्सों में उपलब्ध कराया जाना चाहिए। मुद्रित समाचारपत्र का पहली बार जिक्र सन् 748 ईसवीं में मिलता है, जब चीन में लकड़ी से बने उलटे अक्षरों पर स्याही लगाकर उनसे कागज पर छापने का काम किया गया। चीन की इस उपलब्धि का कारण था कागज की खोज। चीन में होती नाम के हान वंश के सम्राट के शासन काल में कागज बनाने के प्रयोगों में सफलता मिलने लगी थी। यह ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी की बात है। ये प्रयोग सम्राट होती के एक प्रमुख दरबारी त्साई लुन द्वारा किए गए थे। इसी के साथ चीन में छोटे पैमाने पर कागज के निर्माण की सफल शुरूआत हो चुकी थी। हालांकि इतिहासकारों के अनुसार इससे पहले मिस्र एवं यूनान में कागज बनाने के प्रयोग किए जा चुके थे। मिस्रवासियों ने श्सिपरस पेपीरस' नामक पेड़ के तने को नील नदी के दलदल में नरम करके या गला कर उससे कागज बनाने के प्रयोग किए थे। पेपीरस से ही पेपर अर्थात् कागज शब्द अस्तित्व में आया। संभवतः यह वही समय था, जब भारत में लिखने के उद्देश्य से भोज तथा कुछ दूसरे वृक्षों के पत्तों को काम में लाया जाता था।इन आरंभिक प्रयासों और सफलताओं के बावजूद विधिवत मुद्रित समाचारपत्र तभी अस्तित्व में आए, जब 1447 में जर्मनी के स्वर्णकार जोहान गुटनबर्ग ने प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार करने में सफलता प्राप्त कर ली। गुटेनबर्ग ने धातु के अक्षरों को उलटी आकृति में ढालकर मशीन द्वारा मुद्रण का और इस प्रकार ज्ञान के प्रचार–प्रसार के एक नए युग का सूत्रपात किया। इस आविष्कार के दो वर्ष के भीतर ही 42 पंक्तियों वाली बाइबिल सफलतापूर्वक छापी गई, जिसकी संख्या बहुत थोड़े समय में कई लाख तक पहुंच गई। जल्दी ही इस क्रांति ने मुद्रण उद्योग के द्वार खोल दिए और समाचार पत्र व पत्रिकाएं तथा पुस्तकों के एक नए संसार की रचना होने लगी। बढ़ते व्यापार और कारोबार के साथ तालमेल बैठाते हुए समाचारपत्रों में वाणिज्य और व्यवसाय से संबंधित समाचारों को अधिकाधिक स्थान दिया जाने लगा। इसी दौरान फ्रांस में डाक व्यवस्था की शुरूआत और इंग्लैंड में कागज मिल की स्थापना हुई। 1609 में जर्मनी में 'अविसा रिलेशन आर्डर जीतुंग' नाम से यूरोप के पहले नियमित समाचारपत्र का प्रकाशन भी आरंभ हुआ, लेकिन 1665 में प्रकाशित 'लंदन गजट' को ही पहला वास्तविक समाचारपत्र माना गया। इसमें पहली बार डबल कॉलम में समाचार छापने का प्रयोग किया गया। यह पत्र आज भी निकलता है। समाचारपत्रों के बुनियादी विकास और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ प्रकाशन की नींव 17वीं शताब्दी में पड़ी। इस काल में जर्मनी के अलावा फ्रांस, बेल्जियम और इंग्लैड में भी नियमित पत्रों का प्रकाशन होने लगा। इस शताब्दी के उत्तरार्द्ध के अखबारों की मुद्रित सामग्री में भी पाठकीय रूचि के अनुरूप परिवर्तन होने लगा। अब स्थानीय मुद्दों को और अधिक प्रमुखता दी जाने लगी। हालांकि अभी ज्यादातर अखबारों के लिए सेंसरशिप जैसी स्थितियां बरकरार थीं। स्वीडन दुनिया का पहला ऐसा देश था, जिसने 1766 में प्रेस की स्वतंत्रता की रक्षा के उद्देश्य से कानून बनाया।

इसी समय भारत में भी पत्रकारिता की नींव पड़ी। 29 जनवरी 1780 में एक धनी अंग्रेज यात्री जेम्स आगस्टस हिकी ने 'बंगाल गजट' के नाम से देश का पहला समाचारपत्र प्रकाशित किया। हिकी ने अंग्रेज शासकों के कारनामों की ऐसी पोल खोली कि उसे झूठे मामलों में जेल की यात्रा भी करनी पड़ी, लेकिन उसने पत्रकारिता की आजादी के लिए संघर्ष किया और जुर्माना भी भरा। हिकी ने 'बंगाल गजट' के बाद एक 'अन्य अंग्रेज विलियम ड्यून ने 'बंगाल जनरल' के नाम से 1785 में एक और पत्र निकाला। 1785 में ही मद्रास से एक अन्य अंग्रेज वॉयड ने 'मद्रास क्रूरियर' शुरू किया। 1789 में मुंबई से 'बॉम्बे हेराल्ड' नाम से पहला पत्र निकला। मुंबई से ही 1790 में श्बॉम्बे कूरियर' और श्बॉम्बे गजट' का प्रकाशन शुरू हुआ।वर्ष 1844 में टेलीग्राफी के आविष्कार ने समाचारपत्रों की दुनिया का नक्शा ही बदल दिया। इससे मिनटों में सूचना संप्रेषण की सुविधा हासिल हो गई और यथार्थपरक रिपोर्टिंग तथा समय रहते सूचना संप्रेषण संभव हो सका। इस मध्य औद्योगिक क्रांति ने भी समाज में अनेक परिर्वतनों के द्वारा खोले और समाचारपत्र भी उसके प्रभाव से अछूते नहीं रहे। उनकी संख्या और पाठकों की तादाद दोनों में भारी वृद्धि हुई।

ठसी बीच अखबार के लिए एक अलग किस्म के कागज के आविष्कार में सफलता हाथ लगी। 1838 में हैलीफैक्स के चार्ल्स फेनरटी को न्यूज प्रिंट बनाने में कामयाबी मिली। चार्ल्स साधारण कागज बनाने के लिए रद्दी और चीथड़ों की मात्रा का सही अनुपात बैठाने की कोशिश कर रहा था कि अकस्मात लकड़ी की लुगदी से कागज की ऐसी किस्म बनाने में सफलता मिल गई, जो अखबार छापने के लिए बहुत उपयोगी था। हालांकि चार्ल्स ने इसका पेटेंट कराने की व्यावसायिक सूझबूझ नहीं दिखाई और इस खोज को कुछ दूसरे लोगों ने अपने नाम लिखा लिया। 19वीं सदी के ही तीसरे दशक में हिंदी की यशस्वी और संस्कारवान पत्रकारिता की आधारशिला रखी गई। 30 मई 1826 को युगलकिशोर शुक्ल ने साप्ताहिक पत्र 'उदंत मार्तंड' शुरू किया। यह पत्र समाचार चयन, भाषा और सामाजिक सरोकारों की दृष्टि से परंपरा और नए आदर्शों का वाहक बना। लगभग इसी समय महान सुधारवादी नेता राजा राममोहन राय भाषाई पत्रकारिता के लिए उर्वर जमीन तैयार कर रहे थे। उन्होंने बंगला के साथ–साथ अंग्रेजी में भी पत्रों का प्रकाशन किया। सदी के इसी दशक में ऐसे भारी–भरकम प्रिंटिंग प्रेस बनाए जा सके, जो एक घण्टे में 10 हजार मुकम्मल अखबार छापने की क्षमता रखते थे। इन्हीं दिनों फोटोग्राफी की तकनीक भी ईजाद की गई। उसका इस्तेमाल करते हुए पहली बार कई स्थानों से सचित्र साप्ताहिक समाचारपत्र निकाले जाने लगे। 19वीं शताब्दी के मध्य तक समाचार पत्रों ने समाज में अपना विशिष्ट और महत्वपूर्ण स्थान बना लिया। वे सूचनाओं को ग्रहण करने और उनका प्रसारित करने का मुख्य माध्यम बन गए।

1890 से 1920 के बीच के तीन दशकों के समाचारपत्र उद्योग का स्वर्णिम काल कहा जा सकता हैं। इस दौरान विलियम रेनडॉल्फ हर्स्ट, जोसेफ पुलित्जर और लॉर्ड नॉर्थक्लिफ के प्रकाशन साम्राज्य स्थापित हुए। इतना महत्व और विश्वसनीयता हासिल करने के बाद आंदोलन और क्रांति के संवाहक की भूमिका भी समाचारपत्र निभाने लगे। इसका एक उल्लेखनीय उदाहरण 1900 में लेनिन द्वारा प्रकाशित 'इस्क्रा' (चिनगारी) हैं। इसी प्रकार 21 जून 1925 को वियतनाम में 'थान नियन' मार्क्सवाद के प्रचार के उद्देश से निकाला गया। भारत में भी हिंदी, अंग्रेजी एवं अन्य भाषाओं के समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ तेजी से प्रकाशित होने लगे और यह क्रम 21वीं सदी में निरंतर जारी है। भारत में आज समाचारपत्र उद्योग का रूप ले चुका है।

वर्ष 1920 में रेडियो के प्रादुर्भाव ने समाचारपत्रों को समाज में सूचना के प्रमुख वाहक की अपनी भूमिका पर गंभीरता से पुनर्विचार करने के लिए विवश कर दिया। रेडियो के रूप में सूचना के रास्ते और सर्वसुलभ साधन के बाद इस चर्चा ने जोर पकड़ लिया कि यह नई सुविधा समाचारपत्र उद्योग को धराशायी कर देगी। इस चुनौती का सामना करने के लिए अखबारों ने अपने रूप–रंग और सामग्री में परिवर्तन लाते हुए स्वयं को अधिक पठनीय, ज्यादा विचारपूर्ण और ज्यादा खोजपूर्ण सामग्री के साथ प्रस्तुत किया। समाचारपत्र अभी इस चुनौती से निपट ही पाए थे कि उससे भी ज्यादा ताकतवर और प्रभावशाली माध्यम के रूप में टेलीविजन ने और अधिक गंभीर चुनौती पेश कर दी। तकनीक के विस्तार और विकास के साथ–साथ समाचारपत्रों ने भी अपने रूप–रंग को सुंदर, आकर्षक और दर्शनीय बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी, लेकिन अब फिर एक नई चुनौती मुद्रित मीडिया के सामने आ खड़ी हुई है– पिछली शताब्दी के अंतिम दशक में यह चुनौती इंटरनेट ने पेश की है। इससे पहले कभी भी सूचनाओं का ऐसा महासागर एक साथ इतने लोगों को उपलब्ध नहीं था। फिर भी यह मानना गलत होगा कि इंटरनेट ने समाचारपत्रों की प्रासंगिकता समाप्त कर दी है। अपनी लोकप्रियता, आसान पँहुच, सशक्त रिपोर्टिंग और घटनाओं के सामयिक तथा सटीक विश्लेषण के कारण आज भी समाचारपत्र व्यक्ति के जीवन को बहुत गहराई से प्रभावित करने में सक्षम हैं। एक अनुमान के अनुसार हर दिन करोड़ों व्यक्ति कम से कम एक अखबार अवश्य पढ़ते हैं। वर्तमान में प्रिंट मीडिया इंटरनेट की निरंतर प्रखर होती चुनौती का सामना डट कर कर रहा है।

अनावश्यक सामाजिक दबाव का परिणाम है परीक्षा से लगने वाला डर

सीबीएसई और राज्यों के दसवीं और बारहवीं कक्षा के बोर्ड की परीक्षा शुरू हो रही है। छात्रों के साथ–साथ, उनके माता–पिता भी भारी सामाजकि दबाव में हैं क्योंकि हर पड़ोसी–रिश्तेदार यही कह रहा है कि श्अरे इसका तो बोर्ड है और यह सवाल यहीं खत्म नहीं होता, परीक्षा–परिणाम आने पर भी लोग पूछेंगे कि श्अरे इसके कितने नंबर आये?श हमारे समाज में बोर्ड की परीक्षा का इतना खौफ इसलिए है कि व्यस्क यहीं से बच्चों की औपचारिक तुलना की शुरुआत करते हैं। यह जानते हुए भी कि सभी बच्चे अलग–अलग प्रतिभा और दक्षता लिए होते हैं, लोग उनकी तुलना स्कूल–मोहल्ले–रिश्तेदारों के बच्चों से करते रहते हैं। अब जिसको पत्रकारिता में अपना कॅरियर बनाना है, उसकी इंजीनियरिंग की अभिलाषा रखने वाले छात्र से क्या तुलना ? अब जो क्रिकेट, राजनीति या संगीत में रूचि रखता है उसके ऊपर नंबर लाने का दबाव क्यों होना चाहिए ? जरा सोचिए कि हमारे बच्चे अगर वयस्कों की तुलना दूसरे लोगों से करने लगें कि श्आप वैसे क्यों नहीं बन गएश तो क्या होगा ? क्या नंबर की दौड़ इस बात की गारंटी है कि जो छात्र पढ़ाई में बेहतर प्रदर्शन करता है वह जीवन में भी उतना ही सफल होगा ? अभिभावकों को पीछे मुड़ कर अपने सहपाठियों को देखना चाहिए क्योंकि संभव है उनकी कक्षा का सबसे तेज छात्र, आज अध्यात्म या लेखन से जुड़ गया हो जहाँ नम्बरों की कोई अहमियत नहीं है। दुनिया में अधिकतर नवाचार और नाम करने वाले लोगों से कोई उनकी मार्कशीट नहीं मांगता ? किसने पूछा कि सचिन तेंदुलकर, धोनी, मयंक अग्रवाल या फिर रणवीर सिंह, दीपिका या संजीव कपूर के हाई स्कूल–इंटर में कितने अंक आये थे ? दरअसल, हमारी परीक्षा प्रणाली को बदलने की जरूरत है क्योंकि यह छात्रों को सिर्फ पास और फेल नहीं करती है बल्कि उनकी अच्छे और खराब छात्र के रूप में ब्रांडिंग करती है। फिर स्कूल के द्वारा की गयी ब्रांडिंग को, समाज तुलना करके उसको एक सामाजिक स्वीकृति में बदल देता है। इस कार्य में अधिकांश स्कूलों की भी भूमिका सकारत्मक नहीं रहती है। शुरूआती कक्षाओं से ही स्कूल अपने छात्रों के बारे में तेज, औसत और कमजोर बच्चे की धारणा बना लेता है। अपनी इन धारणाओं को शिक्षक लगातार दोहराते रहते हैं और जाने–अनजाने अपनी इस धारणा को सही शाबित करने का प्रयास भी करते हैं। लेकिन स्कूल से निकलने के बाद अधिकांश छात्र अपने जीवन में और कॅरियर में अपनी जगह बना लेते हैं। सीखना एक प्रक्रिया है और इसमें अनेक फैक्टर होते हैं तो फिर छात्र ही पास–फेल क्यों होंगे ? स्कूल पास–फेल क्यों नहीं होते ? सफलता या असफलता कोई एक स्थाई भाव नहीं होता है। क्या एक स्कूल में या एक कक्षा में सभी छात्र मेधावी हो सकते हैं ? आगे चल कर कोई छात्र क्या करेगा, विज्ञान पढ़ेगा, सामाजिक विज्ञान पढ़ेगा या फिर संगीत सीखेगा, फोटोग्राफी करेगा, कुछ पता नहीं है। जीवन की हर विधा में कोई अव्वल नहीं रह सकता है। अब सोचिये कि अगर परीक्षा प्रणाली में तैरना, साइकिल चलाना, खेल–गीत–संगीत–नाटक आदि सब सम्मिलित कर दिया जाए तो क्या तब भी परीक्षा परिणाम वही होंगे ? सचिन तेंदुलकर से लेकर अमिताभ बच्चन तक ने असफलता का स्वाद चखा है। समाज का सफल से सफल व्यक्ति असफलता की राह से गुजरा हुआ है। तो तुलना छोड़िये क्योंकि तुलना एक प्रकार की कुंठा और हिंसा को जन्म देती है। बच्चे को एक बेहतर इंसान बनाने के लिए प्रेरित करिये। कहिये कि बस परीक्षा दो, घर में नंबर या परिणाम कोई नहीं पूछेगा। बच्चे को उसकी रूचि, सीखने की गति और उपलब्धि के लिए बधाई दीजिये।

THIS MONTH

February 24, 1582 - Pope Gregory XIII corrected mistakes on the Julian calendar by dropping 10 days and directing that the day after October 4, 1582 would be October 15th. The Gregorian, or New Style calendar, was then adopted by Catholic countries, followed gradually by Protestant and other nations.

•••

February 8, 1587 - Mary Stuart, Queen of Scots, was beheaded at Fotheringhay, England, after 19 years as a prisoner of Queen Elizabeth I. She became entangled in the complex political events surrounding the Protestant Reformation in England and was charged with complicity in a plot to assassinate Elizabeth.

•••

February 13, 1635 - Boston Latin School, the first tax-payer supported (public) school in America was established in Boston, Massachusetts.

•••

February 6, 1788 - Massachusetts became the sixth state to ratify the new U.S. Constitution, by a vote of 187 to 168.

Compilation:
Honey Shah

BASICS OF MEDIA

Balanced Line: A pair of ungrounded conductors whose voltages are opposite in polarity but equal in magnitude.

•••

Bias Current: An extremely high frequency AC current, far beyond audibility, added during a tape recording to linearize the magnetic information.

•••

Calibration: Adjusting equipment components for example, a console and a tape recorder according to a standard so that their measurements are similar.

•••

Capacitor Microphone: A microphone that transduces acoustic energy into electric energy electrostatically.

•••

Wipe: Transition in which a second image, framed in some geometric shape, gradually replaces all or part of the first image.

•••

Aliasing: The step like appearance of a computer-generated diagonal or curved line. Also called jaggies or stair steps.

•••

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Rahul Mittal

शून्य तक पहुँचने के लिए बहुत तेजी दिखा रही है कांग्रेस पार्टी

दिल्ली विधानसभा चुनाव का परिणाम आ चुका है। आम आदमी पार्टी एक बार फिर से भारी बहुमत के साथ सत्ता में आई है। चुनाव में आम आदमी पार्टी को 62 व भारतीय जनता पार्टी को 8 सीटें मिली हैं। सीटों के हिसाब से देखें तो आम आदमी पार्टी की 5 सीटें कम हुई हैं। इस चुनाव में जहां आम आदमी पार्टी फिर से सत्ता में आने पर खुश है। वहीं भारतीय जनता पार्टी अपना वोट प्रतिशत व सीटें बढ़ने से खुश है। इस चुनाव में यदि किसी को सबसे अधिक नुकसान हुआ है तो वह है कांग्रेस पार्टी। दिल्ली विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की रही सही साख भी समाप्त हो गई है। दिल्ली में कांग्रेस लगातार दूसरी बार शून्य पर आउट हुयी है।

2019 के लोकसभा चुनाव के परिणामों के बाद लगने लगा था कि कांग्रेस दिल्ली में अपनी पकड़ बना रही है। दिल्ली की सात लोकसभा सीटों में से 5 सीटों पर भारतीय जनता पार्टी के बाद कांग्रेस दूसरे नंबर पर रही थी। जबकि आम आदमी पार्टी सिर्फ 2 सीटों पर ही मुकाबले में आ पाई थी। उस चुनाव में कांग्रेस का वोट प्रतिशत भी बढ़कर 22.46 प्रतिशत हो गया था। जबकि उससे पूर्व 2015 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को मात्र 9.03 प्रतिशत ही वोट मिले थे। 2019 के लोकसभा चुनाव में दिल्ली की 70 विधानसभा सीटों में से भारतीय जनता पार्टी 65 पर व कांग्रेस 5 विधानसभा सीटों पर आगे रही थी। उस चुनाव में आम आदमी पार्टी को एक भी विधानसभा क्षेत्र में बढ़त नहीं मिली थी। लेकिन लोकसभा चुनाव के 8 माह बाद ही आप पार्टी ने पूरा पासा पलट कर रख दिया व एक बार फिर भारी बहुमत के साथ सत्तारुढ़ हो गई है।दिल्ली विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने 66 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ा था तथा 4 सीटें गठबंधन के तहत लालू प्रसाद यादव के राष्ट्रीय जनता दल को दी थी। लेकिन 70 में से कांग्रेस के देवेंद्र यादव बादली से, अभिषेक दत्त कस्तूरबा नगर से व अरविंद सिंह लवली गांधीनगर सीट से जमानत बचा पाने में सफल रहे हैं। बाकी कांग्रेस के सभी 63 व राजद के चारों उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो गई। सबसे बुरी हालत तो कांग्रेस के सहयोगी राजद की हुई। उसके (बुरारी, किरारी, उत्तम नगर व पालम) चारों प्रत्याशियों को कुल मिलाकर 3 हजार 463 वोट मिल पाए जो बड़े शर्म की बात है।दिल्ली विधानसभा चुनाव में आप पार्टी से कांग्रेस में आईं अलका लंबा चांदनी चौक सीट पर मात्र 3032 वोट व आप से कांग्रेस में आए आदर्श शास्त्री द्वारका सीट से 5885 वोट ही ले पाए। चुनाव के वक्त ये दोनों आप के विधायक थे। पूर्व सांसद कीर्ति झा आजाद की पत्नी पूनम आजाद संगम विहार सीट से मात्र 2604 वोट ही ले पाईं। 1993 से 2013 तक दिल्ली में 5 बार विधायक रहे कांग्रेस नेता जयकिशन को सुलतानपुर माजरा (सुरक्षित) सीट से मात्र 9033 वोट ही मिले। दिल्ली में कांग्रेस के कद्दावर नेता व कई बार कैबिनेट मंत्री रहे हारून यूसुफ अपनी परम्परागत बल्लीमारान सीट से मात्र 4802 वोट ही बटोर पाए। वहीं पूर्व केंद्रीय मंत्री कृष्णा तीरथ पटेल नगर (सुरक्षित) सीट से मात्र 3382 वोट ही ले पाईं। पूर्व विधायक मुकेश शर्मा को विकासपुरी सीट पर 5721 वोट मिले। पूर्व मंत्री परवेज हाशमी ओखला सीट से 2834 वोट ले पाये। 1993 से 2008 तक लक्ष्मी नगर सीट से लगातार पांच बार चुनाव जीतने वाले व शीला दीक्षित सरकार में 5 साल स्वास्थ्य मंत्री रहे डॉ. अशोक वालिया को महज 5079 वोट ही मिले।

कांग्रेस के आधा दर्जन प्रत्याशी भी 10 हजार वोटों का आंकड़ा नहीं पकड़ पाए। वहीं 10–12 प्रत्याशी ही 5 हजार से अधिक वोट पाने में सफल रहे। दिल्ली में 2013 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को 24.55 प्रतिशत वोट व 8 सीटें मिली थीं। वहीं 2015 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को 9.3 प्रतिशत वोट मिले थे। लेकिन सीट एक भी नहीं जीत पाई थी। 2019 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने 22.46 प्रतिशत वोट लेकर आप से आगे निकल कर दिल्ली में अपने दमदार उपस्थिति दर्ज कराई थी। लेकिन 2020 के विधानसभा चुनाव में मात्र 4.26 प्रतिशत वोटों पर ही सिमट गई व उसे एक भी सीट नहीं मिली। इस चुनाव में कांग्रेस को मात्र 3 लाख 93 हजार 353 वोट ही मिले। जबकि भारतीय जनता पार्टी को 35 लाख 20 हजार 253 वोट व आम आदमी पार्टी को 49 लाख 13 हजार 945 वोट मिले हैं। स तरह देखा जाए तो दिल्ली में कांग्रेस का पूरी तरह से सूपड़ा साफ हो गया। विधानसभा चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी इस तरह से चुनाव लड़ रहे थे मानो अपनी उपस्थिति दर्ज कराने के लिए खड़े हुये हों। कांग्रेस के पारम्पिक दलित, मुस्लिम मतदाताओं ने भी कांग्रेस को छोड़कर पूर्णतया आम आदमी पार्टी का दामन थामा। जिसके चलते कांग्रेस शून्य पर पहुंच गई। 2019 के लोकसभा चुनाव के समय जब शीला दीक्षित प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष थीं तो उस समय कांग्रेस पार्टी काफी सक्रिय हो गई थी। लेकिन कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी पीसी चाको के शीला दीक्षित से मतभेदों के चलते कांग्रेस आम आदमी से नहीं जुड़ पाई थी। पिछले 6 सालों से पीसी चाको ही दिल्ली कांग्रेस के प्रभारी हैं और उनके प्रभारी रहते दिल्ली में लोकसभा, विधानसभा व नगर निगम के जितने भी चुनाव हुए हैं, उन सबमें कांग्रेस को करारी शिकस्त मिली है।

कांग्रेस पार्टी देश में भाजपा को हराकर अगली सरकार बनाने का सपना देख रही है। लेकिन उसका खुद का जनाधार धीरे–धीरे कम होता जा रहा है। 2019 के लोकसभा चुनाव में भी कांग्रेस का जनाधार घटा। हाल ही में संपन्न हुए महाराष्ट्र, झारखंड, विधानसभा चुनाव में भी कांग्रेस मुख्य मुकाबले में नहीं आ पाई थी। महाराष्ट्र में कांग्रेस चौथे नंबर की पार्टी है। सत्ता के लालच में कांग्रेस वहां शिवसेना जैसी कट्टर हिन्दूवादी पृष्ठभूमि वाली पार्टी के साथ मिलकर सरकार चलाने को मजबूर हो रही है। इसी तरह झारखंड में भी कांग्रेस वोटों व सीटों के हिसाब से तीसरे नंबर की पार्टी है। वहां वह झारखंड मुक्ति मोर्चा के साथ सरकार में शामिल है।दिसम्बर 2018 में कांग्रेस ने एक साथ राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के विधानसभा चुनाव जीतकर वहां सरकार बनाई थी। लेकिन मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी 15 वर्षों से निरंतर सत्ता में थी। इस कारण वहां सत्ता विरोधी लहर थी। राजस्थान में मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे का विरोध था। जिसके चलते वहां कांग्रेस सरकार बनाने में सफल रही थी। मध्य प्रदेश में तो कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी में महज 5 सीटों का फर्क रहा था। वहीं राजस्थान में भारतीय जनता पार्टी कांग्रेस से महज डेढ़ लाख वोटों से पीछे रह गई थी।

कांग्रेस के नेता बड़ी–बड़ी बातें तो करते हैं लेकिन पार्टी का संगठन मजबूत करने की दिशा में किसी का ध्यान नहीं रहता है। सभी का यही प्रयास रहता है कि प्रदेशों में कैसे भी करके सहयोगी दलों के साथ मिलकर सरकार में शामिल हो जाएं तथा सत्ता सुख भोगें। कांग्रेस के अधिकांश बड़े नेता चुनाव हारने के बाद राज्यसभा में चले जाते हैं, जिससे उनका मतदाताओं से सम्पर्क कट जाता है। उन्हें पार्टी संगठन की कोई चिंता नहीं रहती है। पार्टी के बड़े नेताओं के आम जनता से कट जाने के कारण कांग्रेस पार्टी दिन प्रतिदिन कमजोर होती जा रही है। प्रदेशों में जो कांग्रेस के प्रभारी लगाए गए हैं वो अपनी मनमानी करते हैं।

दिल्ली में प्रभारी पीसी चाको के खिलाफ बार–बार आवाज उठती रही है मगर उन पर कोई असर नहीं होता है। महाराष्ट के प्रभारी मल्लिकार्जुन खड़गे के खिलाफ मुंबई प्रदेश कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष संजय निरूपम सहित कई नेताओं ने चुनाव के समय खुलेआम आरोप लगाए थे। लेकिन उनको नहीं हटाया गया। कांग्रेस आलाकमान ने अपने प्रदेश प्रभारियों को पूरी छूट दे रखी है। जिसके चलते वो प्रदेशों में अपनी मनमानी चलाते हैं। प्रदेश प्रभारियों के अमर्यादित व्यवहार के चलते कई जनाधार वाले नेता पार्टी छोड़ देते हैं। जमीनी कार्यकर्ता कांग्रेस से नहीं जुड़ पाते हैं। यदि समय रहते कांग्रेस अपने पार्टी संगठन में आमूलचूल परिवर्तन नहीं करती है तो आने वाले समय में उसके मतदाताओं की संख्या में और भी कमी देखने को मिले तो कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी।

भारत के आर्थिक विकास से जुड़ा है विश्व का आर्थिक विकास

21वीं सदी के तीसरे दशक में समाहित, वर्ष 2022 में भारत अपनी स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूर्ण करेगा। आज देश के अंदर ही नहीं बल्कि देश के बाहर भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लगातार कई वर्गों, अर्थशास्त्रियों, अंतरराष्ट्रीय संस्थानों में यह धारणा प्रबल होती जा रही है कि न केवल अगला दशक बल्कि अगली सदी भी भारत के प्रभुत्व वाली होने की प्रबल सम्भावना बनती जा रही है। इसकी नींव पिछले 5 वर्षों के दौरान केंद्र सरकार द्वारा लिए गए कई निर्णयों के चलते रखी जा चुकी है। हाल ही में विश्व आर्थिक फोरम के सम्मेलन में अंतरराष्ट्रीय मोनेटरी फंड (प्डथ) के मुख्य अर्थशास्त्री ने तो विश्व के आर्थिक विकास को ही भारत के आर्थिक विकास से जोड़ दिया। उन्होंने अपने बयान में यह कहा है कि भारत में यदि आर्थिक रूप से गति आएगी तो विश्व की अर्थव्यवस्था में भी गति आएगी। भारत इस समय विश्व के सबसे मजबूत देशों में से एक बन गया है। आज भारत की आवाज पूरे विश्व में गम्भीरता से सुनी जा रही है। कोई भी देश भारत को आज हल्के में नहीं लेता है। राजनैतिक तौर पर भारत की ताकत विश्व में बढ़ी है। वैश्विक स्तर पर सभी बड़ी ताक□तें यथा अमेरिका, रूस, चीन, जापान, आदि देश भारत के पक्ष में खड़े दिखाई देते हैं। वे आज भारत को गम्भीरता से लेते हैं।आर्थिक एवं बाजार की दृष्टि से भी भारत की क्षमता एवं सम्भावनाएँ बहुत बढ़ी हैं। वर्ष 2022 में भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं इस उपलक्ष्य में नीति आयोग ने एक न्यू इंडिया प्रोजेक्ट बनाया है। इस प्रोजेक्ट के तहत 41 सेक्टर पर विशेष फोकस किया जा रहा है एवं कृषि, उद्योग तथा देश में मार्केट के विस्तार करने की ओर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है ताकि देश में आर्थिक विकास को गति दी जा सके एवं रोजगार के अधिक से अधिक अवसर निर्मित किए जा सकें। हाल ही में देश की संसद में प्रस्तुत किए गए आर्थिक सर्वेक्षण में भी यह बात कही गई है कि आगे आने वाले वर्षों के दौरान 3.5 से 4 करोड़ रोजगार के नए अवसर निर्मित होने की प्रबल सम्भावना है। मेक इन इंडिया के माध्यम से देश में रोजगार के नए अवसर निर्मित करने की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। आज वैश्विक स्तर पर यह धारणा बन चुकी है कि अगली सदी एशिया की होने वाली है और एशिया में भारत के बढ़ते क□द को अब कोई नकार नहीं सकता है। इसी कारण से इस समय दुनिया की सभी ताक□तवर देशों की नजर भारत पर रही है। आर्थिक उदारीकरण के बाद से ही भारत पर कई देशों की नजर टिक चुकी है परंतु अब हम एक स्तर और आगे बढ़ गए हैं। अब भारत को केंद्र में रखकर कई देश अपनी नीतियों का निर्माण कर रहे हैं। कई देशों के भविष्य की दिशा भारत को केंद्र में रखकर तय हो रही है। पूरी दुनिया में आर्थिक विकास तेज होगा अथवा मंदी आएगी, इसकी दशा एवं दिशा भारत के आर्थिक विकास को देखकर ही तय की जा रही है। आजकल कई देश पहले भारत की दिशा को आँकते हैं और फिर वे देश अपनी दिशा तय करते हैं। यदि हम सामरिक एवं राजनैतिक दृष्टिकोण से भी भारत की स्थिति को वैश्विक स्तर पर आँकने का प्रयास करें तो हम आज पाएँगे कि भारत का दबदबा वैश्विक पटल पर बढ़ा है। यह अभी हाल ही में कश्मीर के मुद्दे एवं धारा 370 के मुद्दे पर भी देखा गया है। भारत विश्व के लगभग सभी देशों को यह समझने में सफल रहा कि उक्त मुद्दों पर भारत का रूख एकदम सही है। इस प्रकार, भारत अन्य कई मुद्दों पर क्या रूख लेगा इस पर कई देशों की नजर रहती है। भारत भी इन मामलों में अपनी नीतियों को पूरी सजगता के साथ बना रहा है ताकि विश्व का भारत पर विश्वास बना रहे। दुनिया में वैश्विक मुद्दों एवं आर्थिक विकास में आज भारत की महत्वपूर्ण भागीदारी होती जा रही है। दुनिया में कोई भी भारतीय, चाहे वह भारतीय मूल का हो अथवा भारतीय नागरिक हो, वह वहाँ पर यह गर्व कर सके कि वह भारतीय है, इस ओर केंद्र की मोदी सरकार द्वारा लगातार प्रयास किया जा रहा है। भारत की एवं भारतीयों की दुनियाँ में नींव मजबूत हुई है। इसका प्रभाव अब देखने में भी आ रहा है। कई भारतीय आज विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में मुख्य कार्यपालन अधिकारी बन गए हैं। अमेरिका में सिलिकॉन वैली भारतीय मूल के लोग ही चला रहे हैं। अमेरिका, कनाडा एवं जापान जैसे कई विकसित देशों में स्पष्टतः भारतीयों की माँग बढ़ी है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस दिशा में बहुत सुधार दृष्टिगोचर हो रहा है। यह सब इसलिए भी सम्भव हो सका है क्योंकि उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने में देश की सभी सरकारें मिलकर कार्य कर रही हैं। पिछले कुछ सालों में 37,000 करोड़ रुपए देश में उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से स्वीकृत किए गए हैं। उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए देश में बजट लगातार बढ़ता जा रहा है। देश में 75 शिक्षा संस्थानों के जरिए उच्च शिक्षा केंद्र बनाए जाने हेतु भी प्रयास किए जा रहे हैं। इस सम्बंध में आधारिक संरचना भी विकसित की जा रही हैं। परंतु, निजी शिक्षा केंद्रों को भी इस प्रयास में शामिल किया जाना जरूरी होगा। 22 अखिल भारतीय मेडिकल संस्थानों की स्थापना देश में की जा रही है एवं चिकित्सा महाविद्यालयों में डॉक्टर ऑफ मेडिसिन की 16,500 नई सीटों की स्थापना की जा रही है। साथ ही, डठठै की सीटों को भी बढ़ाया जा रहा है। ये नई बढ़ायीं जा रही सीटें पूरे देश में फैली होंगी। नीति आयोग की भी सोच है कि पूरे देश का सर्वांगीण विकास हो। देश से ब्रेन ड्रेन जरूर हो रहा है परंतु भारत के लोग अन्य देशों में शक्ति का केंद्र बनते जा रहे हैं। इन देशों की व्यवस्था को भी सफलता पूर्वक चला रहे हैं। देश में व्यापार करने में आसानी हो इसलिए इससे सम्बंधित नियमों को आसान बनाया जा रहा है। एयर ट्रैफिक बढ़ाने की योजना बन रही है। नए एयरपोर्ट बनाए जा रहे हैं और एयर ट्रैफिक के कई नए मार्ग विकसित किए जा रहे हैं। सड़कों पर नए नए एक्सप्रेस रास्तों का विकास हो रहा है। स्मार्ट शहर बनाए जा रहे हैं। ये सभी काम पूरे देश में समान रूप से हो रहे हैं। एक तरह से पूरे देश का ही सर्वांगींण विकास हो रहा है।

भारतीय बैंकों में सुधार कार्यक्रम लागू कर आमूलचूल परिवर्तन किए जा रहे हैं। देश में बड़े–बड़े चूककर्ता ऋणग्राहियों से वसूली करने एवं उन्हें दिवालिया घोषित करने के उद्देश्य से एनसीएलटी की स्थापना की गई है। इससे बैंकों, विशेष रूप से सरकारी क्षेत्र के बैंकों के गैर निष्पादनकारी आस्तियों की बहुत अच्छी वसूली हुई है। सरकारी क्षेत्र के बैंकों का आपस में विलय किया गया है। सरकारी क्षेत्र की कई बैंक जो घाटे में चल रहे थे वह अब लाभ में आ गये हैं। केंद्र और राज्यों के आपस में सम्बंध सुधरे हैं। देश में आज ऐसा माहौल बन गया है कि हर प्रदेश आज आगे बढ़ना चाहता है। आकांक्षित जिलों को आगे बढ़ाया जा रहा है। आकांक्षित जिलों का चयन सभी राज्यों के जिलों में से किया गया है। सभी राजनैतिक दल अपने प्रदेश में अधिक से अधिक विकास करना चाह रहे हैं। इनकी आपस में आर्थिक विकास को लेकर प्रतियोगिता शुरू हो चुकी है। कृषि एवं ग्रामीण विकास पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है ताकि ग्रामों में निवासियों की क्रय शक्ति बढ़ाई जा सके और वस्तुओं की माँग में वृद्धि की जा सके एवं रोजगार के नए अवसर निर्मित हो सकें।

अंत में यही कहा जा सकता है की इस दशक में, देश के सभी नागरिकों को मिलकर नई ऊर्जा के साथ नए भारत के निर्माण को गति देनी होगी। सरकार के प्रयासों से पिछले पाँच वर्षों में इस दशक को भारत का दशक और इस सदी को भारत की सदी बनाने की मजबूत नींव रखी जा चुकी है।

Celebration of International Mother Language Day in TECNIA

International Mother Language Day (IMLD) formally recognized by UNESCO on 17 November 1999 with the adoption of UN resolution 56/262 Multilingualism in 2002.IMLD is proclaimed for worldwide annual observance on 21 February; with objective to promote awareness of linguistic and cultural diversity and to promote multilingualism. The student members of Literary Club of Tecnia Institute of Advanced Studies celebrated IMLD in the Campus as a mark of acknowledgement of Mother Tongue as the Language. Dr Ajay Kumar Director TIAS highlighted about Globally 40 % of the population does not have access to an education in a language they speak or understand. Multilingual and multicultural societies exist through their languages which transmit and preserve traditional knowledge and cultures in a sustainable way. Dr.Ajay Kumar Singh, Faculty of BA(J&MC) highlightedthat relevance of mother language, emphasized on speaking in public without inhibitions as it's a carrier of our cultural and linguistic diversity for sustainable societies and should feel proud of it. He spoke about Language hierarchies.

Ms. MansiArora BBA student and other participants discussed about influence of foreign language; butalso reiterated that natural flow comes through the mother tongue as the child starts thinking process in it.Later, the students mentioned about the two contradictory attitudes towards English English as the aspirational language which brings cultural capital, and English as the language of the "show-offs".The idea to celebrate International Mother Language Day was the initiative of Bangladesh. It has been celebrated throughout the world since 2000.UNESCO believes preserving the differences in cultures and languages that foster tolerance and respect for others.The celebration of IMLD helps in nourishing traditional values and glorifying them to reinforce the languages' status.

Glimpses of the IMLD at Institute's Campus

MaanviUpadhayaya Student of BA(J&MC) narrating a Story on the importance of Mother Language

Tecnia Organised Blog Writing Competition

A blog is a discussion or informational website published on the World Wide Web consisting of discrete, often informal diary-style text entries the emergence and growth of blogs in the late 1990s coincided with the arrival of web publishing tools that facilitated the posting of content by non-technical users. In the 2010s, the majority is interactive websites, allowing visitors to leave online comments, and it is this interactivity that distinguishes them from other static websites. In that sense, blogging can be seen as a form of social networking service. Indeed, bloggers do not only produce content to post on their blogs, but also often build social relations with their readers and other bloggers. However, there are high-readership blogs which do not allow comments. The students of Tecnia Institute of Advanced Studies participated inBlog Writing Competition on 10th February, 2020 in the Campus to compose theblogs on the topic "The Digital Revolution." The introduction of digital technology also changed the way humans communicate, now via computers, cell phones, and the internet.35 students from BBA, BA(J&MC), BCA, MCA took part in this.The competition began with the stating of overview of Rules and instructions for writing the blog to the participants. The Participants presented the inventive thoughts, high quality writing, and innovative ideas. The judge of the event was Dr. VandanaRaghava, Faculty, BBA Department, TIAS. Entries were judged on the basis of originality, creativity, writing quality and presentation.

At the end the participants were addressed by the Director Sir. He guided the students towards ethical writing. In his speech he mentioned that Blogging seems simple enough but you could get in legal trouble for blogging. Consider some basic blogging ethics and understand the legal issues with blogging. This will not only keep things legal, but also gain readers trust and respect for your blog.

Students of BBA,AyushPuri and ShivamSoni writing the blogs

Glimpse of the Participants of Blog Writing Competition

Director's address to the students on Ethical Blog Writing **Y-B**

9 अप्रैल से होंगी ऑनलाइन प्रतियोगिताएं

रोहिणी स्थित टैक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज़ में टैक्निया ऑनलाइन फिल्म फेस्टिवल एवं रूबरू ऑनलाइन फोटो एक्ज़ीबिशन 9 से 23 अप्रैल 2020 तक आयोजित किया जाएगा जिनकी प्रविष्टियां 16 मार्च 2020 से आनलाइन लिंक द्वारा भरी जा सकती हैं। इन प्रतियोगिताओं को फेसबुक एवं इंस्टाग्राम पर आयोजित किया जाएगा। फोटोग्राफी एवं वीडियोग्राफी क्लब प्रभारी राहुल मित्तल ने बताया कि ये प्रतियोगिताएं 15 से 25 वर्ष तक के विद्यार्थियों के लिए हैं और इसमें कई आकर्षक पुरस्कार भी दिये जाएंगे। यह प्रतियोगिता राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित की जा रही है।

Vol. 16 **No. 2**
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Rahul Mittal,Bal krishna Mishra responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.

Visit To Library

IMPORTANT QUOTES

"The opposite of a correct statement is a false statement. The opposite of a profound truth may well be another profound truth."

Niels Bohr

•••

"In science one tries to tell people, in such a way as to be understood by everyone, something that no one ever knew before. But in poetry, it's the exact opposite."

Paul Dirac

•••

"Anyone who considers arithmetical methods of producing random digits is, of course, in a state of sin."

John von Neumann

•••

"It is unbecoming for young men to utter maxims."

Aristotle

•••

"Grove giveth and Gates taketh away."

Bob Metcalfe

•••

Compilation: Priya Kumari

WINNERS v/s LOOSERS Part-90

Winners use hard arguments but soft words; Losers use soft arguments but hard words.

•••

Winners stand firm on values but compromise on petty things; Losers stand firm on petty things but compromise on values.

•••

Winners follow the philosophy of empathy: "Don't do to others what you would, not want them to do to you"; Losers follow the philosophy, "Do it to others before they do it to you."

•••

Winners make it happen; Losers let it happen.

•••

The Winner is always part of the answer; The Loser is always part of the problem.

•••

The Winner always has a program; The Loser always has an excuse.

•••

To Be Continued In Next Issue-

Compilation: Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at: **youngstertias@gmail.com**